

डॉ. अगस्त कोंकेल, इतिहास, सत्र 1, इतिहास का परिचय

© 2024 गस कोंकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तक पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 1 है, इतिहास का परिचय।

इतिहास पर आधारित पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, मेरा नाम गस कोंकेल है। इतिहास से मेरा संबंध वेस्टमिंस्टर सेमिनरी से है, जहाँ प्रोफेसर रेमंड डिलार्ड मेरे शोध प्रबंध के संरक्षक थे, जो हिजकियाह पर केंद्रित था, और निश्चित रूप से यह मुख्य रूप से 2 इतिहास, यशायाह और राजाओं से संबंधित था। इसलिए, मुझे उस गुरु से इतिहास लेने का सौभाग्य मिला, जिसने इतिहास पर आज तक की सबसे बेहतरीन पुस्तकों में से एक लिखी है।

मेरा शिक्षण करियर वास्तव में विनीपेग, मैनिटोबा में प्रोविडेंस थियोलॉजिकल सेमिनरी में था। मैंने 1984 में वहाँ पढ़ाना शुरू किया, और अगर आपको लगता है कि मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, तो आप सही हैं। लेकिन मैं अभी भी यह टैपिंग करने में सक्षम हूँ, जिसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ।

प्रोविडेंस से सेवानिवृत्त होने के बाद, हम लगभग 10 साल पहले ओंटारियो चले गए। और इसलिए, अब मैं मैकमास्टर डिविनिटी कॉलेज में पढ़ाता हूँ। मुझे इस समय डॉक्टरेट छात्रों को सलाह देने और इस तरह के पाठ्यक्रम पढ़ाने का सौभाग्य मिला है।

तो, जिन पुस्तकों में हमारी रुचि है, उन्हें क्रॉनिकल्स कहा जाता है, जो कि अधिकांश लोगों के लिए एक नाम है। यह नाम काफी अर्थहीन है क्योंकि यह अंग्रेजी में आम नहीं है। और जिस क्षण आप वंशावली के नौ अध्यायों को पढ़ना शुरू करते हैं, आप तुरंत काफी खोया हुआ महसूस करते हैं।

और इसलिए, इतिहास की किताब को अनदेखा कर दिया जाता है। यह वास्तव में, पुराने नियम की लिखी गई आखिरी किताबों में से एक है। इसलिए, हम इतिहास के बारे में थोड़ी बात करना चाहते हैं, और हम इसके प्रामाणिक इतिहास के बारे में थोड़ी बात करना चाहते हैं।

इतिहास की पुस्तक, जैसा कि हमारे हिब्रू बाइबिल और प्रोटेस्टेंट बाइबिल में है, कमोबेश एज्रा-नेहेमियाह की साथी है। और आम तौर पर हमारी बाइबिल इस तरह से व्यवस्थित की जाती है कि एज्रा-नेहेमियाह इतिहास के तुरंत बाद आता है। यह कुछ हद तक समझ में आता है क्योंकि अगर आप इतिहास की आखिरी आयतें पढ़ें, तो आप पाएंगे कि एज्रा-नेहेमियाह की शुरुआत ठीक इसी तरह से होती है, जिसमें साइरस के आदेश के बारे में ठीक यही शब्द हैं कि यरूशलेम में मंदिर को बहाल किया जाना चाहिए।

और वह आदेश लगभग 539 ईसा पूर्व में जारी किया गया होगा। तो, दोनों एक दूसरे से संबंधित प्रतीत होते हैं, और जो बात एज्रा-नेहेमियाह और इतिहास को जोड़ती है वह एक ऐसी किताब है जो हमारी बाइबल में नहीं है, लेकिन हमेशा चर्च की बाइबल में थी, जिसे हम सेप्टुआजेंट कहते हैं। यह ग्रीक बाइबल है।

यह सुधार के समय तक चर्च की बाइबल थी। फर्स्ट एज्रास नामक पुस्तक के बारे में दिलचस्प बात यह है कि यह 2 इतिहास 36 में योशियाह की कहानी से शुरू होती है, और फिर एज्रा, अध्याय 7:33 से 8:12 के साथ समाप्त होती है, जो एज्रा द्वारा कानून पढ़ने के बारे में है। इसलिए, तब यह अनुमान लगाया गया था कि इतिहास और एज्रा-नेहेम्याह ने किसी समय एक निरंतर कार्य का गठन किया था।

तो सेप्टुआजेंट में, हमारे पास इतिहास है, हमारे पास पहला एज्रा है, और हमारे पास दूसरा एज्रा है, जो कि हमारा एज्रा-नेहेमिया है। हालाँकि, यह विचार कि इतिहास वास्तव में एज्रा-नेहेमिया के एक लंबे काम का हिस्सा था, अब अच्छे कारणों से बदनाम हो गया है। अब, पहला एज्रा कभी हिब्रू कैनन में शामिल नहीं किया गया था।

इसे बिल्कुल अलग तरह का लेखन नहीं माना जाता था। सुधारकों ने, जो शास्त्रों के हिब्रू कैनन का पालन करने के लिए प्रवृत्त थे और जिन्होंने ग्रंथसूची को द्वितीयक कैनन के रूप में अलग रखा, उन्होंने प्रथम एजद्रास को भी छोड़ दिया। लेकिन आप इसे अभी भी कैथोलिक बाइबल और रूढ़िवादी बाइबल में पाएंगे, और इसलिए वे इससे परिचित हैं।

हालाँकि, फर्स्ट एजद्रास में वास्तव में इतिहास की तुलना में काफी अलग तरह का जोर है और एज्रा-नेहेमिया की तुलना में एक अलग तरह का जोर है। और इन पुस्तकों का अधिक सावधानीपूर्वक अध्ययन करने पर, यह पता चला है कि ये पूरी तरह से अलग रचनाएँ थीं। वे कभी भी एक ही रचना से संबंधित नहीं हैं, जैसा कि आप 80 और 90 के दशक की कई पुरानी टिप्पणियों में पढ़ेंगे।

इतिहास की पुस्तक यरूशलेम शहर के आस-पास के पूजा करने वाले समुदाय को संबोधित करने के एक बहुत ही खास लक्ष्य के साथ लिखी गई थी। एज्रा-नेहेम्याह एक अलग कहानी बता रहे थे, और फर्स्ट एजद्रास का भी एक बिल्कुल अलग उद्देश्य था। तो, इतिहास की पुस्तक का उद्देश्य क्या है? खैर, हम इतिहास की पुस्तक के लिखे जाने के समय के बारे में पूछकर शुरू कर सकते हैं, जैसा कि हमारे बाइबल में है।

हमारे बाइबल में इतिहास के जो विवरण हैं, वे जरुब्बाबेल के कम से कम छह पीढ़ियों बाद के नहीं हो सकते। जरुब्बाबेल यहूदी नेता है जो लगभग 522 वर्ष में हागै और जक़र्याह में मौजूद है। और जरुब्बाबेल की वंशावली में, 1 इतिहास 3:17 से 24 में, हमें कम से कम छह और पीढ़ियाँ मिलती हैं।

वास्तविक मानव जीव विज्ञान में एक पीढ़ी लगभग 20 वर्ष की होती है। यह सच है कि बाइबिल के कालक्रम में, एक पीढ़ी 40 वर्ष की होती है, लेकिन यह कमोबेश एक प्रतिनिधि संख्या है, जो पीढ़ी

जंगल में मर गई। हममें से ज्यादातर लोगों के लिए अपने परिवार शुरू करने के लिए चालीस साल थोड़े ज्यादा हैं।

हम उन्हें अपने 20 के दशक में शुरू करते हैं। इसलिए, अगर हम वास्तविक वर्षों पर विचार करें जो जरुब्बाबेल की वंशावली में परिलक्षित होंगे, तो यह संभवतः जरुब्बाबेल के लगभग 120 साल बाद होगा, जो हमें वर्ष 400 के आसपास कहीं ले जाएगा। इतिहास की बड़ी योजना में, 400 लगभग अंत है, फारसी साम्राज्य का बिल्कुल अंत।

यह पहले से ही अराजकता में गिर रहा है, और इसके बाद बहुत समय नहीं है जब यह ग्रीक के प्रभाव में पूरी तरह से ढह जाएगा। तो, यह लेखन क्या था? खैर, जेरोम ने इसे क्रॉनिकॉन कहा। क्रॉनिकॉन एक लैटिन शब्द है जो एक निश्चित प्रकार के इतिहास लेखन को संदर्भित करता है जो मानव समाज के बारे में बात करने की शुरुआत में यूनानियों और अन्य लोगों द्वारा किया गया था।

और क्रॉनिकॉन ने जो किया वह सबसे पहले मनुष्यों से शुरू हुआ, जो कि ग्रीक लेखन या अन्य इतिहासों में आमतौर पर एक ऐसा समय था जब देवता और मनुष्य एक दूसरे से बिल्कुल अलग नहीं थे, और फिर अंततः, मनुष्य अपना स्वयं का समाज बन गए, और वे लेखक के समय तक उन विवरणों की कहानी बताते थे जो वे चाहते थे। अब, कमोबेश यही क्रॉनिकल्स करता है, क्योंकि यह एडम से शुरू होता है। एडम, सेठ, हनोक।

तो, आप वापस शुरुआत में आ गए हैं, और यह उस बिंदु से आगे की कहानी बताता है, और फिर हमें यहूदा और यरूशलेम की कहानी पर ले जाता है, जो इतिहासकार के समय तक है, जो लगभग 400 में फारस में है। अब, इतिहास यहूद के लोगों के लिए लिखा गया है, और मैं यहाँ जो करना चाहता हूँ वह आपको फ़ारसी साम्राज्य में यहूद के राज्य को एक मानचित्र पर दिखाना है। यहूद एक ऐसा राज्य था जिसे फारसियों ने बनाया था।

यह यहूदा नहीं है। यह यहूदा की पुनर्स्थापना नहीं है। वास्तव में इसका निर्वासन में गए यहूदा से कोई राजनीतिक संबंध नहीं है।

यहूद राज्य की सीमाएँ एज्रा और नहेमियाह तथा विभिन्न शहरों के संदर्भों से कमोबेश निर्धारित की गई हैं। वे कुछ हद तक अनुमानात्मक हैं, क्योंकि एज्रा और नहेमियाह हमें उन सभी शहरों के बारे में नहीं बताते जो फ़ारसी राज्य का हिस्सा थे, लेकिन वे काफी प्रतिनिधि हैं, और हम सीमा को लगभग उसी तरह से बना सकते हैं जिस तरह से हम इसे इस मानचित्र पर देखते हैं। तो, यह गेरार तक पश्चिम में जाता है, जो पहले के समय के फ़िलिस्तीन क्षेत्र के पास है।

एनगेदी तक जाता है, जो मृत सागर के बीच में है। उस बिंदु पर, एदुमिया का पूरा राज्य शुरू होता है, जो कमोबेश पूर्व एदोम है। और फिर, मृत सागर के दूसरी तरफ, हमारे पास मोआब है, और फिर हमारे पास अम्मोन है, और निश्चित रूप से, एज्रा और नहेमियाह में जो बात काफी ध्यान देने योग्य है, वह यरूशलेम और यहूद और अम्मोन और सामरिया के बीच दुश्मनी है।

यहूद राज्य में रहता है, जो एक फारसी राज्य है जो फारसियों के शासन के अधीन है, और कई मायनों में उन पर निर्भर है। और यहूद का केंद्र बिंदु यरूशलेम और मंदिर का जीर्णोद्धार है, और इतिहासकार की रुचि इसी में है।

यहूद के अन्य शहरों के बारे में बहुत अधिक बात नहीं करता है। वह फिलिस्तीन की भूमि में इज़राइल के पूरे इतिहास के बारे में अधिक बात करता है, लेकिन वह उस इतिहास को बताता है ताकि ये लोग समझ सकें कि यरूशलेम में उस समय वे कौन थे। जब हम इतिहास की पुस्तक में आते हैं तो यही राजनीतिक परिस्थिति हमारे सामने आती है।

तो, यह हमें वापस वहीं ले जाता है जहाँ हमने छोड़ा था। अब, इतिहासकार के लिए मुद्दा यह है कि इस फ़ारसी राज्य में वे कौन हैं, यह छोटा, प्रतीत होता है कि महत्वहीन लोगों का समूह, यह है कि वे एक वादे के उत्तराधिकारी हैं, और यह वास्तव में महत्वपूर्ण बात है। पूरी किताब डेविड से किए गए वादे के इर्द-गिर्द बनी है, यही वजह है कि डेविड और सोलोमन इतिहासकार के इतिहास का सबसे बड़ा हिस्सा हैं।

लेकिन हम इस वादे को खास तौर पर दाऊद के शासनकाल के अंत में, अध्याय 22 में देखते हैं, जहाँ दाऊद यहोवा के राज्य, परमेश्वर के राज्य के वादे के बारे में सुलैमान को अपना काम सौंपता है। यह वह वाक्यांश है जिससे यीशु नए नियम में शुरुआत करने जा रहे हैं, परमेश्वर का राज्य। खैर, यह कोई ऐसा वाक्यांश नहीं था जिसे यीशु ने गढ़ा हो।

यह इस अवधारणा से विकसित हुआ कि इस्राएल और यहूदा के राजनीतिक राज्य के चले जाने के बाद भी ईश्वर के लोगों के रूप में बने रहने का क्या मतलब है और इसे फिर कभी पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा। 1948 तक कभी भी कोई राजनीतिक राज्य नहीं था, जब इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा पुनर्जीवित किया गया। इसलिए, वे वादे के लोग हैं।

वादे के लोगों के रूप में उन्हें क्या माना जाना चाहिए? खैर, यह मंदिर के इर्द-गिर्द केंद्रित है। इसलिए, अध्याय 28 और 29 में, हमें दाऊद द्वारा सुलैमान को सार्वजनिक रूप से नियुक्त किया गया है, जहाँ वह नातान द्वारा दिए गए वादे को दोहराता है। फिर, अध्याय 29 में, दाऊद द्वारा सुलैमान को दिया गया आशीर्वाद उसे यह आश्वासन देने के लिए है कि वह दुनिया के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है।

क्योंकि यह उसका सिंहासन नहीं है, यह यहोवा के राज्य का सिंहासन है। और यहोवा का राज्य सदा तक बना रहेगा।

इसलिए, फारसियों ने शायद इस छोटे से यहूदी राज्य के बारे में ज़्यादा नहीं सोचा होगा। वे कमोबेश मिस्र से आने वाले आक्रमणों से उनकी रक्षा करने के लिए एक सैन्य बफर हैं। फारसियों के लिए वे बस यही हैं।

लेकिन इतिहासकार के लिए, वे इससे कहीं ज़्यादा मायने रखते हैं। इतिहासकार के लिए, ये वादे के लोग हैं। और इसीलिए उन्होंने अपनी किताब लिखी।

तो, इतिहास, फिर, एक इतिहास है। वास्तव में, पुराने नियम की किसी भी अन्य पुस्तक के विपरीत, इतिहास एक इतिहास है। यह खुद को वीरिम कहता है हथिमिम, समय की घटनाएँ, एक इतिहास।

तो, यह इतिहासकार का इज़राइल और यहूदा का इतिहास लिखने का अपना तरीका है, जैसा कि उसने इस इतिहास के भविष्यसूचक विवरणों में पाया, अर्थात्, यहोशू से 2 राजाओं तक। लेकिन इतिहासकार इस इतिहास को बिल्कुल अलग तरीके से देखता है। और इसलिए, कहानी को अपने तरीके से बताता है।

किंग्स को सबसे व्यापक रूप से कोडित किया गया है, हालांकि हमें किंग्स से इतिहासकार के व्यापक उद्धरणों के बारे में कुछ ध्यान देने की आवश्यकता है। जब इतिहासकार कहानी का उपयोग करता है तो दो चीजें होती हैं जैसा कि हम किंग्स के भविष्यसूचक इतिहास में पाते हैं। उनमें से एक यह है कि इतिहासकार कभी-कभी, काफी सूक्ष्म तरीकों से, शब्दों या अभिव्यक्तियों या घटनाओं के समय, कालक्रम को बदल देता है।

हम इतिहास के पन्नों को पढ़ते हुए इनमें से कुछ को देखेंगे। ताकि वह कहानी को उस तरह से बता सके जिस तरह से उसे बताया जाना चाहिए ताकि यह पता चले कि यह वास्तव में क्या है, यहोवा का राज्य, न कि कोई राजनीतिक राज्य जो बेबीलोनियों के निर्वासन के साथ ही खत्म हो गया। लेकिन दूसरी बात यह है कि इतिहासकार राजाओं के जिस संस्करण का इस्तेमाल कर रहे हैं, वह 1948 तक हमारे पास मौजूद संस्करण नहीं है।

उसके बाद भी, जब तक मृत सागर में खोजे गए इन स्क्रॉल को पढ़ना, पहचानना और प्रकाशित करना शुरू नहीं हुआ, तब तक इसे वास्तव में बहुत अधिक नहीं समझा गया। इसलिए, अब हम महसूस करते हैं कि कभी-कभी जब इतिहासकार हमारे राजाओं के संस्करण से अलग होता है, तो यह कुछ और नहीं बल्कि राजाओं के उनके संस्करण में वही बात नहीं कही गई जो हमारे राजाओं के संस्करण में कही गई है। यहोशू से लेकर दूसरे राजाओं तक की भविष्यवाणी की पुस्तकों में, हम महसूस करते हैं कि उनका इतिहास काफी लंबा था।

आखिरकार, वे सदियों के समय को कवर करते हैं। और उन्होंने कई अलग-अलग तरह के स्रोतों का इस्तेमाल किया। मेरा अपना मानना है कि उन्होंने विभिन्न संग्रहों के रूप में शुरुआत की और किंग्स के एक से अधिक संस्करण थे।

मुझे लगता है कि किंग्स का पहला संस्करण हिजकिय्याह के समय में सबसे बाद में लिखा गया था। इसलिए किंग्स की एक किताब थी जो हिजकिय्याह के समय में लिखी गई थी, लेकिन उसके बाद विकसित हुई और तब तक बनी रही जब तक कि यह आज मसोरेटिक पाठ में नहीं आ गई। इतिहासकार के पास अन्य स्रोत भी हैं।

हम यह देख सकते हैं क्योंकि वह अपने स्रोतों के प्रति काफी वफादार है। वह जो लिखा गया है उससे विचलित होना पसंद नहीं करता; वह चाहता है कि उसका इतिहास सच हो।

वह चाहता है कि यह सटीक हो। वह चाहता है कि यह यहोवा के राज्य के बारे में सटीक रूप से बताए। इसलिए, इतिहास एक ऐसा इतिहास है जो यहूद के लोगों के लिए अपने समय के लिए लिखा गया है।

यह हमें कहानी की एक बिल्कुल नई व्याख्या देता है जैसा कि उस समय तक ज्ञात हो सकता था। इतिहासकार यह मानता है कि आप भविष्यवाणी की कहानी जानते हैं। वास्तव में, हम देखेंगे कि अपने इतिहास को लिखने में बाइबल का उपयोग इतना गहन है कि यदि आप इसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं तो आप संभवतः इससे महत्व नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

वह एडम, सेठ और हनोक से शुरू करता है। अब, हममें से ज्यादातर लोग उस समय बहुत बुरे नहीं थे। ओह हाँ, मुझे पता है कि एडम कौन है।

हाँ, मुझे याद है कि सेठ कौन था। वह कैन के बाद आया था। और हाँ, मुझे पता है कि हनोक कौन था।

उसके तुरंत बाद, हम भटकने लगे। खैर, जैसा कि जेरोम ने बहुत सही कहा, आप वास्तव में अपनी बाइबल को तब तक नहीं जानते जब तक आप इतिहास को नहीं जानते। और अगर आप इतिहास को समझते हैं, तो आप वास्तव में अपनी बाइबल को जानते हैं।

क्योंकि आप इतिहास को तब तक नहीं समझ सकते जब तक आप उस इतिहास को नहीं जानते जिसका इस्तेमाल उन्होंने बहुत विस्तार से किया है। लेकिन यह एक ऐसा इतिहास भी है जो हमारे समय के लिए लिखा गया है क्योंकि उन्होंने अनिवार्य रूप से इज़राइल की अवधारणा का इतिहास लिखा है। और यही उनका मुख्य मुद्दा है, इज़राइल।

वह याकूब शब्द का इस्तेमाल सिर्फ़ भजन 105 को उद्धृत करते समय करता है। इसके अलावा, वह शुरू से ही अब्राहम के बेटों को एसाव और इस्राएल के रूप में संदर्भित करता है। यहूद में इन लोगों को यह जानने की ज़रूरत है कि उत्पत्ति में वापस शुरू होने वाले इस्राएल के लिए परमेश्वर का क्या इरादा था।

अब, यह कि इस्राएल वास्तव में सुसमाचारों और विशेष रूप से पौलुस में इस्राएल से जो अभिप्राय है, उसकी पृष्ठभूमि है। जब आप रोमियों 9 से 11 में जाते हैं, और हम इस बिंदु पर निष्कर्ष निकालेंगे, इस्राएल के बारे में पौलुस की समझ बिल्कुल वैसी ही है जैसा इतिहासकार ने चित्रित किया है। इसलिए इतिहास हमारे लिए काफी प्रासंगिक है क्योंकि यह हमें बता रहा है कि हमें इस्राएल शब्द से क्या समझना चाहिए।

इज़राइल बहुत चर्चा में है। हर कोई सोचता है कि जब हम इज़राइल के बारे में बात करते हैं तो वे जानते हैं कि इसका क्या मतलब है। लेकिन सच्चाई यह है कि बाइबल में इज़राइल के कई अर्थ हैं।

जो परमेश्वर के राज्य के लिए प्रासंगिक है वह इतिहासकार का इस्राएल है। तो यह पुस्तक के लिए हमारा परिचय है। धन्यवाद।

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तक पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 1 है, इतिहास का परिचय।